Uttarakhand Open University, Haldwani

MSW-05 - Unit-02

आधारभूत सामाजिक मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाएं

सामाजिक मनोवैज्ञानिक प्रक्रियायों को समझने के लिए प्रारंभ में ही कुछ आधारभूत प्रक्रियायों को समझना आवश्यक है | इसके अंतर्गत प्रत्यक्षीकरण, गुणारोपण , सीखना ,सामाजीकरण,अभिप्रेरण ,अभिवृत्ति ,पूर्वाग्रह ,रुढीयुक्तियाँ को समझना आवश्यक है |

सामाजिक प्रत्यक्षीकरण

सामाजिक प्रत्यक्षीकरण एक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से हम व्यक्तियों को समझने का प्रयास करते है |यह एक संज्ञानात्मक सामाजिक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है |जिस प्रकार से एक छोटा बालक अपने आप पास के व्यक्तियों,वस्तुओं एवं घटनाओं को देख कर समझने का प्रयास करता है |इस प्रक्रिया में व्यक्ति ,वास्तु को देखना जहाँ प्रेक्षण कहलाता है वही उसको पहचानना तादात्मीकरण कहलाता है | यह सामाजिक व्यवहार को देखने एवं समझने में अहम् भूमिका निभाता है | इसके अंतर्गत दो प्रकार के प्रत्यक्षीकरण का अध्ययन किया जाता है जिसमे पहला व्यक्ति प्रत्यक्षीकरण और दूसरा स्वाप्रत्यक्षीकरण कहलाता है |

व्यक्ति प्रत्यक्षीकरण

इस प्रक्रिया के अंतर्गत व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति की विशेषताएं जैसे शीलगुण,प्रेरणा, अभिवृत्ति जैसी अमूर्त विशेषताओं का आंकलन करता है और इसके आधार पर ही वह उस व्यक्ति की छाप या उसके विषय में निर्णय लेता है की व्यक्ति कौन है और कैसा है | क्योंकि प्रत्यक्षीकरण एक अमूर्त विशेषता है अतः इसका आंकलन व्यक्ति के व्यवहार से किया जाता है | अतः यह सामाजिक समझ विकसित करने एवं व्यक्ति की विशेषता के आधार पर उसका आंकलन करने में सहायता प्रदान करती है | जिसमें व्यक्ति के शीलगुण एवं बुद्धि इत्यादि का आकलन किया जाता है |

स्वप्रत्यक्षीकरण

स्वप्रत्यक्षीकरण से तात्पर्य व्यक्ति के अपने प्रत्यक्षीकरण से है |वह अपने बारे में धारणाएं बनाता है एवं उनका स्वयं मूल्यांकन करता है |इसमें सकारात्मक मूल्यांकन जहाँ समायोजन को आसान बनती है वहीँ विपरीत स्थिति कठिनाई पैदा करती है | स्वा का मूल्याकन वह दूसरों से डुलना के आधार पर करता है | वहीँ स्वा मूल्यांकन में परोपकारी ,कठोर ,उदार ,क्रोधी इत्यादि विशेषताओं का अध्ययन करता है |

गुणारोपण

सीखना

सीखने की प्रक्रिया जन्म से ही शुरू हो जाती है | जैसे ही नवजात शिशु जन्म लेता है वह अपनी सहज प्रेरणा के आधार पर व्यवहार किया जाता है | सामाजिक व्यवहार के गुण सीखने की प्रक्रिया का ही भाग है | सामाजिक सीखना कुशलताओं,तथ्यों एवं मूल्यों को अर्जित करने की ओर संकेत करता है | सीखने की प्रक्रिया नित-नयी क्रियाओं को जन्म देती है और उन्हें पुनः बल प्रदान करती है | इसी प्रक्रिया के अंतर्गत जैविकीय शिशु सामाजिक प्राणी के रूप में विकसित होता है |

सामाजीकरण

सामाजीकरण की प्रक्रिया जन्म से ही शुरू हो जाती है | यह जैविक प्राणी को सामाजिक प्राणी के रूप में विकसित करने में सहायता प्रदान करती है | सामाजीकरण की प्रक्रिया व्यक्ति के जन्म से प्रारंभ होकर उसकी मृत्यु तक चलती रहती है | सामाजीकरण की प्रक्रिया में बालक पहले प्राथमिक समूह का सदस्य होकर द्वितीयक समूह का सदस्य बनता है |चार्ल्स कुले का आत्मदर्शन का सिद्धांत इसी प्रक्रिया की व्याख्या करता है |

अभिप्रेरणा

अभिप्रेरणा एक विशिष्ट आतंरिक कारक या दशा है जो क्रिया की पहल करती है या उसे बनाये रखती है | यह एक भावनात्मक – क्रियात्मक करक है जो कि चेतन एवं अवचेतन रूप से व्यक्ति के व्यवहार या लक्ष्य की ओर अग्रसारित करती है |अभिप्रेरणा से सम्बंधित विभिन्न सिद्धांत है जैसे – मनोविश्लेष्णात्मक सिद्धांत (फ्रायड),क्षेत्र या गेस्टाल्ट का सिद्धांत (कर्ट लेविन),प्रकार्यात्मक –स्वायत्ता का सिद्धांत (जॉन डीवी और ऑलपोर्ट)एवं आत्म कार्यान्वयन सिद्धांत (मैस्लो) का अध्ययन किया जाना समीचीन है |

अभिवृत्ति

सामाजिक सीख के द्वारा अभिवृत्ति को ग्रहण किया जाता है |सामाजिक विश्व के किसी भी पक्ष का मूल्यांकन अभिवृत्ति द्वारा ही किया जाता है |यह जन्मजात नहीं होतीं है वरन इसका निर्माण सामाजिक सीख एवं सामाजिक तुलना के द्वारा सीखी गयी प्रक्रिया है |इसकी प्रक्रिया बहुधा स्थायी होती है | यह अभिवृत्ति ,व्यवहार से इतर होती है और सभी व्यक्तियों में एक सामान नहीं होती है |

पूर्वाग्रह

पूर्वाग्रह एक प्रकार की मनोवृत्ति है जिसकी प्रकृति नकारात्मक है | किसी समूह के प्रति प्रतिकूल मनोवृत्ति व्यक्ति के स्थापित आदर्शों का प्रतिफल है | इसी के आधार पर वह किसी के प्रति पूर्व निर्णय कर लेता है | पूर्वाग्रह रुढीयुक्तियों ,लोक कथाओं एवं पौराणिक कथाओं के सम्मिलन से बनती है | पूर्वाग्रह में स्थिरता पाई जाती है परन्तु ये स्थायी नहीं होती है अपितु इसमें परिवर्तन संभव है |पूर्वाग्रह के सामाजिक –सस्कृतिक द्रष्टिकोण के अंतर्गत प्रचार एवं शिक्षा को महत्वपूर्ण मन गया है |जिससे पूर्वाग्रह को कम करने में सहायता मिलती है |

रुढीयुक्तियाँ

साधारण शब्दों में कहें तो रुढीयुक्तियाँ एक मिथ्या वर्गीकरण करने वाली अवधारणा है |रुढीयुक्तियाँ मानस पर बनी धरणा या चित्र है जो किसी समूह के प्रति विशिष्ट शीलगुणों या विशेषताओं का निर्धारण करता है | ये सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों ही होतीं है | इसका पूर्वाग्रह से घनिष्ठ सम्बन्ध होता है | सकारात्मक प्रत्यक्षीकरण के मध्य्यम से इनको कम किया जा सकता है |जिससे पूर्वधारित विश्वासों को कम करने में सहायता मिलती है | अतः नकारात्मक प्रवृति से बचनें हेतु पूर्वाग्रहों का यथायोग्य अध्ययन करना अति आवश्यक है | सामाजीकरण की प्रक्रिया में पूर्वाग्रह एवं रुढीयुक्तियाँ विस्तृत अध्ययन के साथ साथ विश्लेषण की प्रक्रिया से की जाये तो पूर्व धारणाओं में परिवर्तन संभव है |

सार सन्दर्भ

उपर्युक्त अध्ययन के पश्चात यह स्पष्ट होता है कि यह सामाजिक मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाएं सामाजीकरण की वो प्रक्रियाएं है जो एक व्यक्ति को सामाजिक प्राणी बनाती है | प्रथमतः प्राथमिक समूह और इसके पश्चात द्वितीयक समूहों में सामाजीकरण में ये मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाएं सहभागी की भूमिका निभातीं है | इस प्रकार से सीखने की प्रक्रिया में ये सभी युक्तियाँ व्यक्ति को सामाजिक बनाने के साथ –साथ ही समाज के अनुरूप व्यवहार करने एवं सही एवं गलत के विभेद में सहभागी बनती है एवं एक सामाजिक प्राणी का निर्माण करती है |

आप सभी शिक्षार्थियों से अपेक्षा है कि सारगर्भित रूप में यहाँ यह समझाने का प्रयास किया गया है कि सामाजीकरण किस प्रकार होता है परन्तु अधिक विस्तृत अध्ययन हेतु आपको अपनी पाठ्य सामग्री का अध्ययन करें |